ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292 PP. NO.- 308-310
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

ग्रामीण अंचल के लुप्तप्राय मनोरंजन

डॉ0 राकेश गुप्ता
विभागाध्यक्ष –समाजशास्त्र विभाग, नेशनल पी0 जी0 कालेज, भोगॉव– मैनपुरी (उ0प्र0), भारत।

Received- 21.05.2019, Revised- 25.05.2019, Accepted - 28.05.2019 E-mail: - aaryvart2013@gmail.com

सारांश :ग्रामीण जीवन प्रकृति के अधिक निकट रहा है। इसलिए उसके मनोरंजन के साधन भी प्र. ति के तत्वों से ओतप्रोत थे। पशु–पक्षियों से मनुष्य का प्रेम सर्वविदित है। सभी एक–दूसरे के पूरक रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण मनोरंजन के एक लुप्तप्राय साधन तीतरबाजी के वर्णन करने का प्रयास किया गया है। भौतिक व यान्त्रिक साधनों की प्रचुरता एवं व्यक्तिवादी परिवेश व वातावरण में मनुष्य प्रकृति व प्राकृतिक वातावरण से बहुत तेजी से दूर होता जा रहा है। वह कंकरीट के जाल में ही सुख व शांति की तलाश कर रहा है जिसकी

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण जीवन, मनोरंजन, ओतप्रोत, सर्वविदित, लुप्तप्राय साधन, तीतरबाजी, परिवेश।

मनोरंजन प्रत्येक समाज की अनिवार्य आवश्यकता है। मनोरंजन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि स्वयं मानव समाज। मनुष्य जब सभ्यता के विकास के आरम्भिक स्तर पर था तब भी समूह के सदस्य एक स्थान पर बैठकर पारस्परिक अनुभवों के द्वारा एक–दूसरे का मनोरंजन किया करते थे।

सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ ही मनोरंजन के भी नवीन साधन विकसित होने लगे। ग्रामीण जीवन के लिए मनोरंजन एक ऐसी संस्था है जो व्यक्ति को कठिन परिश्रम करने के पश्चात नवीन उल्लास तथा स्फूर्ति प्रदान करती है और अभावग्रस्त जीवन में मानसिक संन्तुलन को बनाये रखने का प्रयत्न करती है।

ग्रामीण मनोरंजन लोगों में सामूहिकता की प्रवृत्ति को विकसित करने में सहायक है। गांव में बाजियों द्वारा भी मनोरंजन होते रहे हैं या किए जाते रहे हैं। तीतरबाजी, मुर्गाबाजी, बुलबुलबाजी गांव के मनोरंजन के अभिन्न अंग रहे हैं। ये बाजियां शौक के लिए की जाती थी और कभी–कभी इनमें हार–जीत के लिए शर्त भी रखी जाती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण मनोरंजन के एक साधन तीतरबाजी को यहां पर वर्णित करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के आधार के रूप में उ0प्र0 के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों को संदर्भ माना गया है। मनोरंजन के इस साधन के वर्णन में सहभागी और असहभागी अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

तीतर खेत–खलिहानों में रहने वाला एक पक्षी है। यह खेतों की मेड़ों, विभिन्न फसलों के खेतों, विभिन्न झाड़ियों के झुरमुटों के बीच देखा जा सकता है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में इसे बिना कठिनाई के देखा जा सकता है। .षकों को खेती कार्यों के दौरान व चरवाहों को पशुओं को चराने के दौरान तीतर हमेशा मिलते रहते हैं। इन्हीं में से कुछ शौकीन ग्रामीणजन इन्हें पकड़कर पाल लेते हैं। तीतर बहुत फुर्तीला होता है और अधिकतर जोड़े के रूप में इसकी उपस्थिति प्रदर्शित होती है। यह बहुत तेज दौड़ने व कम ऊँचाई में उड़ने वाला पक्षी है। शौकिया लोग इन्हें दौड़ाकर व कुछ लोग फन्दे के माध्यम से पकड़ने का प्रयास करते हैं। कुछ इनके बच्चों को घोसले से भी पकडने की कोशिश करते हैं। इनके घोसले झाड़ियों व झुरमुटों के बीच जमीन में रहते हैं।

ग्रामीणों की विभिन्न गतिविधियों के दौरान जब कभी–कभार लोग इनके घोसलों के नजदीक पहुंच जाते हैं तो तीतर कुछ दूर जाकर जोर–जोर से बोलने लगता है। इसकी आवाज बड़ी तेज होती है। कीड़ी–कोकों, कीड़ी–कोकों की आवाज करके यह माहौल को गुंजायमान कर देता है। कुछ दूर इसलिए तीतर चला जाता है ताकि लोग उसके पीछे आ जाएं और उसके घोसले तक न पहुंच पाएं। ग्रामीण परिवेश के अनुभवी कभी–कभी ऐसी स्थितियों में भी तीतर के बच्चों तक पहुंच जाते हैं।

तीतर का रंग मटमैला होता है। नर तीतर कुछ बड़ा एवं भारी होता है। चोच का अग्र भाग नुकीला होता है। देखने में यह आकर्षक होते हैं। अपनी तेज आवाज के द्वारा ये अपने साथियों को बुलाने व उनकी दूरी का अंदाजा लगाने का कार्य भी करते हैं।

गांव के कुछ गिने–चुने व्यक्ति ही इन्हें पालने के शौकीन होते हैं। शौकीन लोग या तो जोड़े के रूप में या अकेले तीतर पालते हैं। जोड़े के रूप में अधिकतर एक नर व मादा होते हैं जबकि जो लोग एक ही तीतर पालते हैं वे नर ही रखते हैं। कभी–कभी जोड़े के रूप में कुछ शौकीन दोनों नर तीतर ही रखते हैं। एक तीतर के लिए एक खाने वाला जबकि दो तीतर के लिए दो खाने वाला पिंजड़ा होता है। कुछ लोग स्वयं ही पिंजड़ा बना लेते

PIF/3.007 ***ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14***

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

हैं जबकि कुछ लोग पेशेवर बुनकरों से पिंजड़ा खरीदते हैं या बनवाते हैं। पिंजड़े में खाने–पीने के लिए दो छोटी–छोटी कटोरी या मिट्टी के पात्र होते हैं जिनमें इनका दाना–पानी रखा रहता है। वैसे इनका रक्षक या पालक इन्हें प्रतिदिन दीमक खिलाने अवश्य ले जाता है। दीमक को तीतर बड़ी तत्परता से खाते हैं। ये दीमक दो या तीन दिन के पुराने गोबर में ढ़ेरों में रहते हैं। बांबी की मिट्टी में भी दीमकों का ढ़ेर होता है जिन्हें फोड़ने पर इनका झुंड बाहर निकलता है और ये तीतर उन पर टूट पड़ते हैं। दीमक चट करने के बाद तीतर पिंजड़े में वापस आ जाते हैं। पालतू तीतर साधारणतया ऐसे मौंके पर दूर नहीं उड़ते या भागते।

ऊपर हमने तीतर के निवास, उसको पकड़ने, पालने, रखने इत्यादि का वर्णन किया है। इसके पश्चात तीतरबाजी के विभिन्न पहलुओं का वर्णन वर्णित किया जा रहा है। तीतर पालने के शौकीन लोग अपने तीतर को खूब खिलाते–पिलाते हैं ताकि ये दूसरों के तीतर से तगड़े दिखाई दें। सामान्यतः यदि किसी गांव में किन्हीं दो ग्रामीणों के पास तीतर है तो वे कभी–कभी आपस में इन्हें लड़ाते भी रहते हैं। ऐसे मौकों पर इस मनोरंजनात्मक लड़ाई को देखने के लिए अनेक लोग एकत्र हो जाते हैं। बच्चे भी ऐसे मौकों पर खूब मजा लेते हैं। उन्हें उनकी बोली भी खूब भाती है और वे उनकी नकल भी करते हैं। पिंजड़े में बंद तीतरों को देखकर भी बच्चे आनंदित होते हैं। वे उन्हें विभिन्न गतिविधियों से निहारते, चिढ़ाते व परेशान करते हैं। यही सब मनोरंजन के अदृश्य पहलू हैं जिन्हें हम देख नहीं पाते। एक गांव में तीतरों के मध्य होने वाली लड़ाईयां मात्र मनोरंजनात्मक होती हैं। इसमें कोई बाजी नहीं हारता। जो जीतता है उसे शाबासी दी जाती है। जिस व्यक्ति का तीतर हारता है वह थोड़ा उदास जरूर रहता है परन्तु उसे भी तसल्ली रहती है कि उसके तीतर ने भी अच्छी टक्कर दी।

यदि कोई तीतर बार–बार हारता है तो उसे छोड़ या मुक्त कर दिया जाता है। किसी गांव में यदि किसी एक ही के पास तीतर है तो वह कभी–कभार आस–पास के गांव में तीतरबाजी के लिए भी जाता है। यहां पर ये लोग बाजी भी लगाते हैं और जीतने वाले को तय पैसे दिए जाते हैं। यहां पर यह ध्यान देना आवश्यक है कि तीतरबाजी या तीतर की लड़ाई किसी चबूतरे, देव प्रांगण, कुंआ या तालाब के किनारे, किसी पेड़ के नीचे, किसी ऊंचे स्थान या किसी किनारे किसी प्रसिद्ध स्थल पर कराई जाती है।

स्थानीय मेलों में भी लोग अपने–अपने तीतर तीतरबाजी के लिए ले जाते हैं। स्थानीय छोटे–छोटे मेलों में ऐसे लोगों के समूह को किसी किनारे पर आसानी से देखा जा सकता है, जहां लोग अपने–अपने तीतरों का दमखम दिखाते हैं। ऐसे मनोरंजन को देखने वाले शौकीन की भीड़ भी पर्याप्त होती है। सामान्य अवसरों एवं मेलों के अतिरिक्त कुछ लोग इनके साप्ताहिक दंगल भी करवाते हैं। सामान्यतः कोई शौकीन व्यक्ति अपने खेत, खलिहान या बगीचे या किसी एकांत जगह पर तय दिन के अनुसार तीतरबाजों को बुलाता है। इसमें काफी दूर–दूर के गांव के लोग पहुंचते हैं। इन शौकीनों को ऐसे स्थानों व दिनों का पता भलीभांति मालूम रहता है। ऐसी जगह पर एक से एक जोशिले तीतर देखे जा सकते हैं जो लड़ने के लिए कीड़ी–कोको, कीड़ी–कोको की तेज आवाज करते हैं। तीतर मालिक व बाजी लगाने के शौकीन लोग एक गोल घेरा बनाकर बैठ जाते हैं। लड़ाई या तीतरबाजी के दौरान जो तीतर इस गोल घेरे से बाहर जाने की कोशिश करता है उसे हारा हुआ माना जाता है। जो व्यक्ति अपना तीतर लड़ाना चाहता है वह उसे गोल घेरे में छोड़ देता है और जो उससे लड़ना चाहता है वह अपने पिंजड़े से जोर–जोर से आवाज निकालते हैं। यह आवाज एक तरह से ललकार है और उसका मालिक इसी ललकार के अनुसार उसे गोल घेरे में लाता है। तीतरबाजी शुरु होने से पूर्व शौकीन बाजी लगाते हैं। तीतर चोंच एवं पंखों से एक–दूसरे पर टूट पड़ते हैं। ये उछल–उछल कर लड़ते हैं, चोंच से प्रहार करते हैं। जहां प्रहार होता है वहां के छोटे–छोटे पंख भी निकल जाते हैं। गर्दन पर ज्यादा प्रहार होने व पंख निकलने की वजह से वह पतली नजर आने लगती है।

हारने वाला तीतर घेरे को छूने लगता है और लड़ने से भागने लगता है। लड़ाई के दौरान उनके मालिक उनका उत्साह भी बढ़ाते हैं और उनका नाम भी लेते रहते हैं। लड़ाई के दौरान कई बार पिंजड़े में बंद माता तीतर भी अपने साथी में आवाज के माध्यम से जोश भरती है। तीतर के एक जोड़े की लड़ाई पांच से दस मिनट ही चलती है। विजेता तीतर मालिक के चाहने के अनुसार एक–दो लड़ाई और लड़ सकता है। यह बात तीतर की क्षमता व ताकत पर भी निर्भर करती है। अधिकतर एक तीतर दो लड़ाई से ज्यादा नहीं लड़ते।

ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन का यह विलक्षण नजारा

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

विलुप्त प्रायः है। यह मनोरंजन अब अतीत बनता जा रहा है। गांवों में तीतर पालकों व शौकीनों की संख्या शून्य हाती जा रही है। व्यक्ति अब व्यक्तिगत मनोरंजन हेतु भी इन्हें नहीं रखते। चरवाहे भी कम होते जा रहे हैं और जो हैं उन्हें भी इस तरह के मनोरंजन रास नहीं आते। मेले, उत्सव में भी अब पहले जैसे भीड़ नहीं जुटती। गांव/मुहल्ले/पड़ोस में भी इस मनोरंजन के कद्रदानों की संख्या अवशेष मात्र भी नहीं रह गयी। पहले कुछ ग्रामीणजन तीतरबाजी की तरह मुर्गेबाजी का भी शौक रखते थे पर अब वे मनोरंजनात्मक पहलू भी शून्य ही है। पहले बूढ़े, बच्चे व युवा सभी लोग इस तरह के मनोरंजन में सम्मिलित होते थे परन्तु अब सभी ने इस तरह के मनोरंजनों को विस्मृत कर दिया है। दूसरी तरफ अब पक्षियों को पकड़ने के सम्बन्ध में भी कई कानून बन गये हैं। इसके अतिरिक्त पुलिस का भी भय रहता है। गांवों में भी अब शहरों जैसी तमाम सुविधाएं आ गयी हैं, मनोरंजन के लिए नये भौतिक साधन उनके जीवन में प्रवेश करते जा रहे हैं। व्यक्तिवादी मनोवृत्ति के चलते सामूहिकता की भावना घटती जा रही है। व्यक्ति के जीवन से शांति, स्थिरता व प्रकृति से लगाव एवं पशु–पक्षियों से प्रेम के तत्त्व निरंतर घटते जा रहे हैं। खेती व पशुपालन जैसे कार्यों से भी युवाओं का काफी रुझान घटा है। इन सब कारकों की वजह से इस तरह के मनोरंजन ग्रामीण अंचलों से विलुप्त होते जा रहे हैं। आज मनुष्य भौतिकता की आंधी में उड़ रहा है जिसकी वजह से उसके जीवन में स्थायित्व रह ही नही गया। संभव है आने वाले समय में ग्रामीण अंचलों से एक के बाद एक इसी तरह के तमाम मनोरंजनात्मक साधन अवशेष मात्र रह जायेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लवानिया एम.एम. एवं जैन के. शशि, ग्रामीण समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान।
2. विभिन्न अवसरों एवं जगहों पर सहभागिता के माध्यम से सर्वेक्षण एवं अवलोकन।

*****

PIF/3.007 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*